मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 2 फरवरी 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

अब तक आयोजित विश्व पुस्तक मेले : एक नजर में 2
'राममनोहर लोहिया' के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण 2
चार बाल पुस्तकों का लोकार्पण 3
'आज का भारतीय बाल साहित्य' पर चर्चा-गोष्ठी 3
लखनऊ में 'क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान कथा लेखन' पर कार्यशिविर आयोजित 4
पंजाब में पुस्तक प्रदर्शनी एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन 5
साहित्यकार द्रोणवीर कोहली नहीं रहे 5
सिनेमा आधारित कैलेंडर का लोकार्पण 6
बारीपदा पुस्तक मेला 6
सेवानिवृत्ति 6
ट्रस्ट के पूर्व निदेशक श्री कर्त्तार सिंह दुग्गल के निधन पर ट्रस्ट-परिसर में शोक सभा 7
पूर्व ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. सुकुमार अझिकोड नहीं रहे 7
ट्रस्ट-परिसर में झंडोत्तोलन 8
चिट्ठीघर 8

नवीनतम प्रकाशन

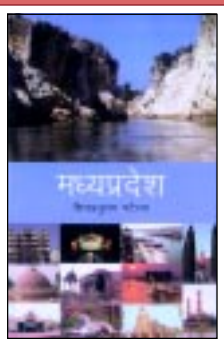

मध्यप्रदेश

शिवअनुराम पटैरया

पृ. 388 ` 165

20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की दस्तक

भारतीय पुस्तक बाजार को विश्व बाजार के साथ जोड़ने के अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्विवार्षिक 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' (न.दि.वि.पु.मे.) का आयोजन करता है। अपने 20वें संस्करण में प्रवेश करती एशिया और अफ्रीका की सबसे बड़ी यह प्रकाशन परिघटना भारत एवं विदेशों के सैकड़ों प्रकाशकों को एक-दूसरे के निकट लाती है। विश्व पुस्तक मेला के आयोजन की पहल ने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों का ध्यान भारत की तरफ आकर्षित किया है। पहली बार 1972 में नई दिल्ली के विंडसर प्लेस में लगभग 200 प्रकाशकों के साथ शुरू हुआ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का यह आयोजन आज बढ़कर 1200 से अधिक प्रतिभागियों तक जा पहुंचा है जो प्रगति मैदान जैसे विशाल परिसर में आयोजित होता है।

'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' में थीम पर केंद्रित पुस्तकों की विशि ाष्ट प्रदर्शनी पाठकों का विशेष ध्यान आकर्षित करती है। थीम पर केंद्रित कुछ चुनिंदा पुस्तकों की प्रदर्शनी के साथ-साथ थीम पर चर्चा एवं संवाद के सत्र भी आयोजित किए जाते हैं। अब तक जिन विषयों को थीम बनाकर विशेष प्रदर्शनियां लगाई जा चुकी हैं वे हैं बाल पुस्तकें, अनुवाद, पत्रिकाएं, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, खेलकूद तथा गांधी एवं नेहरू पर तथा उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें।

20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला ने दस्तक दे दी है और यह प्रगति मैदान में 25 फरवरी से 4 मार्च 2012 तक आयोजित होने जा रहा है। यह मेला प्रगति मैदान के हॉल सं. 1 से 14 में चलेगा। इस बार पुस्तक मेले का थीम होगा–सिनेमा। 'प्वाइंट ऑफ व्यू : भारतीय सिनेमा पर पुस्तकों की अंतरराष्ट्रीय स्वत्वाधिकार प्रदर्शनी : भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष की ओर' नाम से इस थीम को भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। थीम के एक भाग के रूप में मेले में विशेष रूप से निर्मित मंडप में विश्व के सबसे बड़े बहुभाषी फिल्म उद्योगों में से एक हमारे फिल्म उद्योग की सौ वर्ष की यात्रा को, एक प्रदर्शनी में, सिनेमा पर हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी पुस्तकों के प्रदर्शन के जरिये दिखाया जाएगा। मंडप में फिल्म उद्योग से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन तो होगा ही, साथ ही थीम पर चर्चा, संवाद एवं कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा। मेले के दौरान कुछ चुनिंदा फिल्मों का प्रदर्शन भी किया जाएगा।

इसी तरह, मेले के दौरान बाल मंडप में

आयोजक

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

सहयोग

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स
फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इंडिया
दिल्ली स्टेट बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन,
फेडरेशन ऑफ एजुकेशनल पब्लिशर्स इन इंडिया,
अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ, कैपेक्सिल,
एसोसिएशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स

आयोजित की जाने वाली गतिविधियां भी विशिष्ट आकर्षण होंगी। प्रगति मैदान के हॉल नं. 14 में ने.बु.ट्र. के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के द्वारा यहां प्रतिदिन 11 से 1 बजे तक तथा 3.30 से 5.30 बजे तक बच्चों के लिए पुस्तक आधारित मनोरंजक गतिविधियां, कार्यशालाएं एवं बाल साहित्य संबंधी संगोष्ठी व चर्चाएं होंगी। दिनांक 25-26 फरवरी को 'मेरा नन्हा भारत' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित होगी।

विदित हो कि अफ्रो-एशियाई क्षेत्र के प्रकाशन जगत के सबसे बड़े और सर्वाधिक प्रतिष्ठित आयोजन के रूप में समादृत यह पुस्तक मेला पूरे विश्व के सभी बड़े और महत्वपूर्ण प्रकाशन संस्थानों की भागीदारी के साथ-साथ बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक भारतीय प्रकाशन उद्योग के भी बड़े एवं ख्यात-विख्यात व्यक्तित्वों का मिलन स्थल है। वस्तुतः न.दि.वि.पु.मे. विश्व के इस भाग में पुस्तकों के प्रोन्नयन, सह प्रकाशन व्यवस्था और व्यापारिक आदान-प्रदान के साथ-साथ साहित्यिक और प्रकाशन संबंधी सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है, जो कि दक्षिण एशिया के प्रकाशन एवं बौद्धिक दुनिया के लिए द्वार खोलता है।

चूंकि विश्व समुदाय में राजनीतिक, बौद्धिक और आर्थिक क्षेत्र में प्रगति के कारण भारत की स्थिति को पहचान और उचित मान्यता मिली है और भारतीय प्रकाशन जगत में भी जबरदस्त उछाल आया है, इसलिए न.दि.वि.पु.मे. एक महत्वपूर्ण आयोजन के रूप में देखा जाने लगा है। पिछले न.दि.वि.पु.मे. का आयोजन 30 जनवरी से 7 फरवरी 2010 तक हुआ था, जिसमें भारत और विदेशों के 1200 से अधिक प्रदर्शकों ने भाग लिया था। इस बार का पुस्तक मेला पूर्वापेक्षा और बड़ा तथा बेहतर होगा। यह भारत के मिले-जुले और समृद्ध प्रकाशन व्यवसाय को प्रदर्शित करने का सही अवसर होगा ऐसा कहा जा सकता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया आप सभी को नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के इस विशिष्ट 40वें वर्ष के आयोजन में भाग लेने के लिए आमंत्रित करके हर्ष का अनुभव करता है।

अब तक आयोजित विश्व पुस्तक मेले : एक नजर में

क्रम.	*वर्ष*	*स्थान*	*क्षेत्रमाप (मीटर)*	*भागीदारी*
पहला	1972	विंडसर प्लेस	7,780	200
दूसरा	1976	प्रगति मैदान	7,700	266
तीसरा	1978	प्रगति मैदान	12,000	554
चौथा	1980	प्रगति मैदान	16,800	450
पांचवां	1982	प्रगति मैदान	21,000	540
छठा	1984	प्रगति मैदान	20,000	561
सातवां	1986	प्रगति मैदान	20,000	600
आठवां	1988	प्रगति मैदान	21,000	625
नौवां	1990	प्रगति मैदान	22,000	625
दसवां	1992	प्रगति मैदान	24,000	849
ग्यारहवां	1994	प्रगति मैदान	26,000	984
बारहवां	1996	प्रगति मैदान	32,000	948
तेरहवां	1998	प्रगति मैदान	21,000	1036
चौदहवां	2000	प्रगति मैदान	29,000	1281
पंद्रहवां	2002	प्रगति मैदान	25,000	1065
सोलहवां	2004	प्रगति मैदान	36,000	1240
सत्रहवां	2006	प्रगति मैदान	38,000	1293
अठारहवां	2008	प्रगति मैदान	46,200	1343
उन्नीसवां	2010	प्रगति मैदान	42,000	1200

ताजा जिल्द की महक

किताबों की गंध का अनुभव वही कर सकता है, जो कोई न कोई पुस्तक हर दिन अपने सिरहाने रखकर सोने का आदी हो। नई नवेली, कोरी किताबों की गंध, बहुत पुरानी हो गई पीले पड़ गए पन्नों वाली किताबें, नीली स्याही या पेंसिल से लकीरें खींच-खींचकर चितर दी गई किताबें। हर किताब की खुशबू का अपना मिजाज होता है। किताबों के जो शौकीन पढ़ने की ललक की दुहाई देते हैं, दरअसल वे सब उस खुशबू के दीवाने होते हैं, जो किताबें अपनेपन के रूप में फैलाती रहती हैं। इसी अपनेपन की खुशबू ये किताबें 25 फरवरी से 4 मार्च, 2012 के बीच नई दिल्ली के प्रगति मैदान में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में बिखेरेंगी।...हमेशा की तरह दुनियाभर के प्रकाशक, लेखक, पुस्तक प्रेमी, जिज्ञासु पाठक आएंगे और नई-पुरानी, विभिन्न विषयों की किताबों की दुनिया से रूबरू होंगे।

आउटलुक, फरवरी 2012 (ले. : आकांक्षा पारे काशिव) से साभार

'राममनोहर लोहिया' के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण

नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित 'राममनोहर लोहिया' पुस्तक के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण विजयवाड़ा पुस्तक उत्सव में 9 जनवरी, 2012 को किया गया। ट्रस्ट की राष्ट्रीय जीवनचरित पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित इस पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कृष्णा जिला के जिलाधिकारी श्री एस.ए.एम. रिजवी ने कहा, ''राममनोहर लोहिया न केवल एक बड़े नेता और राजनीतिज्ञ थे बल्कि वे वर्तमान पीढ़ी और राजनीतिज्ञों के लिए एक 'रोल मॉडल' भी हैं। राष्ट्र के लिए उनका त्याग अविस्मरणीय है और उनका समूचा जीवन आम आदमी तक समाजवाद पहुंचाने के संघर्ष में बीता।'' उन्होंने कहा कि इस पुस्तक को पढ़कर आज की युवा पीढ़ी लोहिया और उनके आंदोलन को समझ सकेगी।

प्रख्यात सामजवादी चिंतक तथा सेंटर फॉर साइंटिफिक सोशलिज्म, आचार्य नागार्जुन यूनिवर्सिटी, गुंटूर के निदेशक प्रो. अंजैया ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए लोहिया और उनके समाजवादी विचारों एवं दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने लोहिया की तेलुगू में जीवनी प्रकाशित करने के लिए ट्रस्ट की प्रशंसा भी की। अतिथि वक्ता के रूप में प्रख्यात समाजवादी श्री रावेला सोमैया ने कहा कि लोहिया की विचारधारा को युवाओं तक पहुंचाना चाहिए। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे देश के राष्ट्रीय नेताओं एवं स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियां पढ़ें।

वरिष्ठ पत्रकार, प्रख्यात अनुवादक (लोकार्पित पुस्तक के भी अनुवादक) श्री आर.वी. रामाराव तथा विजयवाड़ा पुस्तक उत्सव सोसाइटी के सचिव श्री डी. अशोक कुमार ने भी उपस्थित श्रोताओं को संबोधित किया। ट्रस्ट में तेलुगू के सहायक संपादक डॉ. पथिपका मोहन ने स्वागत उद्बोधन किए तथा एन.बी.टी. की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कार्यक्रम का समन्वय भी किया।

चार बाल पुस्तकों का लोकार्पण

शिक्षाविद् एवं राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती विभा पार्थसारथी ने आईआईसी, नई दिल्ली में आयोजित एक पुस्तक लोकार्पण समारोह में चार बाल पुस्तकों का लोकार्पण किया। नेशनल बुक ट्रस्ट ने हाल में अपनी नेहरू बाल पुस्तकालय पुस्तकमाला के तहत *फ्लाई हाई इन दि स्काई, लॉस्ट एंड फाउंड, रेड एंड ब्लू पेंसिल्स* और *तितली एंड दि म्यूजिक ऑफ होप* शीर्षक चार अंग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित कीं।

पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए सुश्री विभा ने कहा कि ये पुस्तकें समाज में शांति की संस्कृति कायम करने का उत्कृष्ट माध्यम हैं। इन पुस्तकों की शैली कुछ हटकर है और इनमें विभिन्न चित्रों का सुंदर समायोजन है। बच्चे इन पुस्तकों को पढ़कर खुश होंगे क्योंकि ये शांति की संस्कृति की दिशा में एक विकल्प प्रदान करेंगी और हमें युद्ध के नकारात्मक आयामों से दूर ले जाएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि ये पुस्तकें शांति, सौहार्द और प्रेम को समझने में विश्व भर के लोगों की सहायता करेंगी।

इस अवसर पर इंटरनेशनल सेंटर फॉर लिटरेसी एंड कल्चर (अंतरराष्ट्रीय साक्षरता एवं संस्कृति केंद्र–आईसीएलसी) के अध्यक्ष श्री ताजिमा शिंजी, आईसीएलसी की सदस्य सचिव सुश्री कुरोकावा ताइको, जानेमाने लेखक श्री सुबीर शुक्ला एवं जानीमानी लेखिका तथा प्रकाशक सुश्री उर्वशी बुटालिया ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किए। युद्धग्रस्त देशों के बच्चों के बीच कार्य करते हुए उन्होंने आपस में अपने-अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि ये पुस्तकें शुरुआत हैं क्योंकि इनमें चुनौतीपूर्ण विषय का चयन किया गया है और ये प्रभावित क्षेत्रों के बच्चों के समक्ष उपस्थित समस्याओं के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाएंगी। उन्होंने ने.बु.ट्र. से इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशन करने का आग्रह भी किया।

इसके पूर्व, ने.बु.ट्र. के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि ये पुस्तकें विभिन्न देशों के लोगों में शांति और सद्भाव कायम करने में सहायता करेंगी।

इन पुस्तकों की रचना एक कार्यशाला में *लिसन टु मी* परियोजना के तहत भारत, पाकिस्तान, नेपाल और जापान के विशेषज्ञों के संयुक्त प्रयास से की गई। कार्यशाला का आयोजन काठमांडू में दि पीस स्टोन फाउंडेशन (हिरोशिमा) और दि जापान फाउंडेशन के सहयोग से इंटरनेशनल सेंटर फॉर लिटरेसी एंड कल्चर (आईसीएलसी), टोक्यो द्वारा किया गया।

विश्व भर में हो रहे संघर्ष और युद्ध के फलस्वरूप मानवजाति को कष्टों का सामना करना पड़ता है और युद्धों के प्रति एक अति दुखद तथ्य यह है कि इसके शिकार मुख्यतः बच्चे होते हैं–मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में। पुस्तकों में बच्चों के निर्मल मन और उनके साथियों के प्रति उनके प्रेम, शांति तथा सद्भाव की अनुभूति का सचित्र चित्रण किया गया है।

'आज का भारतीय बाल साहित्य' पर चर्चा-गोष्ठी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के एक अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा. कें.) द्वारा दिल्ली तथा देश के अन्य भागों में बाल साहित्य पर मासिक चर्चा की शृंखला के एक भाग के रूप में 'आज का भारतीय बाल साहित्य' विषय पर 9 जनवरी, 2012 को भुवनेश्वर के स्टेट रिसोर्स सेंटर फॉर एडल्ट एजुकेशन में एक चर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए प्रख्यात चित्रकार श्री अतनु राय ने कहा कि बाल पुस्तकों में चित्रांकन ऐसे हों जिससे बच्चे आनंदित हो सकें। इस सामान्य सोच कि आज के बच्चे पुस्तकें नहीं पढ़ते और अपना समय टीवी देखने अथवा कंप्यूटर गेम्स खेलने में बिताते हैं पर उन्होंने जोर देकर कहा कि पुस्तक में पाठ के अनुकूल चित्र बच्चों को निश्चित रूप से आकर्षित करते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए साहित्यिक पाठ के साथ चित्रांकन भी उसके बराबर ही होना चाहिए।

इस अवसर पर महत्वपूर्ण वक्ताओं में थे–लेखिका श्रीमती दीपा अग्रवाल, *प्रथम बुक्स* के विषय विकास की प्रमुख श्रीमती मनीषा चौधरी, प्रख्यात बाल लेखक श्री दाश बेनहूर, 'ओपेपा' (OPEPA) के मीडिया समन्वयक तथा *झुमका* के संपादक श्री मानस रंजन सामल, रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र तथा ओड़िया भाषा प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ. हरिहर कानूनगो। वक्ताओं ने बच्चों की बदलती पठन जरूरतों के अनुकूल उनके लिए पर्याप्त पठन सामग्री की अनुपलब्धता पर चिंता व्यक्त की। राज्य संसाधन केंद्र, प्रौढ़ शिक्षा के निदेशक श्री सत्यब्रत बारिक ने इस चर्चा-गोष्ठी की अध्यक्षता की।

लखनऊ में 'क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान कथा लेखन' पर कार्यशिविर आयोजित

विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया एवं 'टीम फॉर साइंटिफिक अवेयरनेस ऑन लोकल इश्यूज इन इंडियन मासेस' (तस्लीम) के संयुक्त तत्वावधान में 'क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान कथा लेखन' विषयक दो दिवसीय कार्यशिविर का आयोजन लखनऊ स्थित नेशनल पी.जी. कॉलेज के सभागार में 26 एवं 27 दिसंबर, 2011 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन 26 दिसंबर को हुआ। उद्घाटन सत्र में अपना बीज वक्तव्य देते हुए भारतीय विज्ञान कथा लेखक समिति के सचिव डॉ. अरविंद मिश्र ने कहा कि विज्ञान कथा साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसकी एक परिभाषा देना संभव नहीं है। यही कारण है कि इसकी अनेकानेक परिभाषाएं दी गई हैं। यह एक तरह से विज्ञान कथा की विराटता को उद्घाटित करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंग्रेजी साईंस फिक्शन के विश्विविख्यात हस्ताक्षर श्री अनिल मेनन ने कहा कि हिंदी लेखकों में भी रोचक विज्ञान कथाएं लिखने का माद्दा है और वह लिख भी रहे हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में कम भागीदारी के चलते कथाकार विज्ञान लेखन को भविष्य के रूप में नहीं देख रहे। इस अवसर पर उन्होंने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि वे इंजीनियरिंग के छात्र रहे हैं। लेकिन पी-एच.डी. के दौरान उन्हें सिएटल में एक विज्ञान कथा लेखन वर्कशॉप में भाग लेने का अवसर मिला, जिसने उनका जीवन बदल दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की 'विज्ञान-कथा-लेखन' कार्यशाला पूरे देश में समय-समय पर होनी चाहिए।

वरिष्ठ विज्ञान-कथाकार श्री देवेंद्र मेवाड़ी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चीन ने सन 2002 में 'साईंस-फिक्शन' लेखन की शताब्दी मनाई, जबकि अपने भारत में हिंदी 'साइंस-फिक्शन' लेखन का इतिहास सौ वर्षों से भी पुराना है और इतना पीछे चल रहा है। उन्होंने बताया कि राहुल सांकृत्यायन, हरिवंश राय बच्चन और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे साहित्यकार का सहयोग इस विधा को मिलने के बाद भी 'हिंदी विज्ञान-कथा लेखन' को अभी बहुत दूरी तय करनी है, जिसमें हमारा-आपका सहयोग बहुत आवश्यक है। प्रशासनिक अधिकारी श्री हेमंत कुमार ने युवा कथाकारों को 'विज्ञान-कथा कैसे लिखें' इसकी सलाह दी। उन्होंने बताया कि 'साईंस-फिक्शन' में कविताएं और 'हाइकू' भी लिखी जा रही हैं और इस क्षेत्र में इसकी बहुत संभावना है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. सी.एम. नौटियाल ने बताया कि विज्ञान-कथा में साहित्य के साथ-साथ 'विज्ञान' का तथ्य बेहद आवश्यक है। उन्होंने 'फिक्शन' और 'फंतासी' में भी अंतर बताया और कहा कि 'विज्ञान-कथा' में फंतासी नहीं बल्कि साईंस फिक्शन होना चाहिए। सत्र में 'साईंस फिक्शन इन इंडिया' (डॉ. अरविंद मिश्र) और 'बुढ़ढा फ्यूचर' (जीशान जैदी) पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। द्वितीय सत्र में आमंत्रित वक्ताओं ने प्रतिभागियों के साथ विज्ञान कथा पर चर्चा की और उन्हें विज्ञान कथा लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। इस सत्र में ट्रस्ट में हिंदी के सहायक संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने सहभागी छात्रों के साथ संवाद किया और उन्हें विज्ञान, कहानी और उसके बीच के संबंधों की जानकारी दी।

कार्यक्रम के दूसरे दिन पहले सत्र में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित *जीनोम यात्रा* (विनीता सिंघल), *इसरो की कहानी* (वसंत गोवारीकर) एवं *विज्ञान और आप* (जी.जे. लवकरे) पुस्तकों का लोकार्पण सहभागी बच्चों द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम इस मायने में अनोखा रहा कि इन पुस्तकों का लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों ने किया। इस सत्र में डॉ. अरविंद मिश्र, डॉ. देवेंद्र मेवाड़ी, श्री पंकज चतुर्वेदी एवं डॉ. विनीता सिंघल ने अपने विचार रखे। सभी वक्ताओं ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि विज्ञान लेखन में सरल भाषा में इतनी रुचिकर और उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। इससे विज्ञान को लोकप्रिय करने में निश्चय ही सफलता मिलेगी। *विज्ञान और आप* पुस्तक पर चर्चा करते हुए अरविंद मिश्र ने कहा कि यह पुस्तक विज्ञान को एक लोकप्रिय तरीके से परिभाषित करती है, इसमें आदि मानव काल से लेकर आज तक के प्रौद्योगिक विकास पर प्रकाश डाला गया हे। *इसरो की कहानी* पुस्तक पर विमर्श करते हुए देवेंद्र मेवाड़ी ने बताया कि यह केवल इसरो की कहानी मात्र नहीं है, यह लेखक वसंत गोवारिकर और विक्रम साराभाई की आत्मकथा भी है। *जीनोम यात्रा* की लेखिका विनीता सिंघल ने कहा कि 'जीन' जीव-जगत का सार है और हम 'जीन क्रांति' के आने वाले युग के द्वार पर खड़े हैं। इस सत्र का संचालन पंकज चतुर्वेदी ने किया।

कार्यक्रम के अगले सत्र में भारतीय भाषाओं में लिखी जा रही विज्ञान कथाओं पर चर्चा की गई, जिसमें श्री चंदन सरकार ने बांग्ला की विज्ञान कथाओं की समृद्ध परंपरा को रेखांकित किया। इसी क्रम में जीशान हैदर जैदी ने उर्दू की विज्ञान कथाओं का परिचय देते हुए कहा कि उर्दू के पहले विज्ञान कथाकार लखनऊ से रहे हैं। चर्चा के इस क्रम में अमित कुमार ओम ने मराठी विज्ञान कथाओं के बारे में बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि यदि विज्ञान कथाकार स्थानीय मुद्दों, मान्यताओं और बिंबों का प्रयोग करें, तो वे अपनी बात को ज्यादा प्रभावी बना सकते हैं। चर्चा के दौरान यह बात भी निकलकर सामने आई कि हिंदी की तुलना में मराठी और बांग्ला का विज्ञान कथा साहित्य काफी संपन्न है। यदि इन भाषाओं में रची गई विज्ञान कथाओं को हिंदी में अनूदित करके प्रस्तुत किया जाए, तो इससे जहां एक ओर हिंदी विज्ञान कथा साहित्य समृद्ध होगा, वहीं उसे पढ़कर नए रचनाकार विज्ञान कथा लिखने के लिए भी प्रेरित हो सकेंगे।

भारतीय विज्ञान कथाएं किस तरह से जन-जन के बीच स्थापित हो सकती हैं, किस प्रकार से वे आम पाठकों को अपने से जोड़ सकती हैं, इस बारे में 'विज्ञान कथाओं के वैश्विक घटक और अनुवाद कार्य' सत्र में श्री विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी ने विस्तार से चर्चा की। इसी क्रम में श्री हरीश गोयल ने वैश्विक विज्ञान कथाओं के बारे में बताते हुए हिंदी विज्ञान कथाओं पर उनके प्रभाव को रेखांकित किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए युवा पत्रकार डॉ. मुकुल श्रीवास्तव ने साहित्य और विज्ञान के अंतर्संबंध की चर्चा करते हुए कहा कि हमें विज्ञान कथाओं के आलोचनात्मक पहलू को भी ध्यान में रखना होगा और विज्ञान कथाओं को इससे जूझना होगा। इस क्रम में बुशरा अलवेरा ने विज्ञान कथाओं के अनुवाद में आने वाली समस्याओं तथा संभावनाओं की बात की और शब्द की जगह अर्थ के महत्व पर बल दिया।

दैनिक 'जनसंदेश टाइम्स' के संपादक डॉ. सुभाष राय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमारा भारतीय समाज प्रारंभ से ही एक वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न समाज रहा है, किंतु धीरे-धीरे हम उस सबसे कटते चले गए और आज हालत यह है कि कोई विज्ञान को पढ़ना नहीं चाहता है, सरकारी विभागों में वैज्ञानिकों के हजारों पद खाली पड़े हुए हैं। यह हमारी सरकारी नीतियों का दुष्परिणाम है। हमें इसके बारे में सोचना होगा। समाज में विज्ञान के बारे में जागरूकता फैलानी होगी, और इस काम में विज्ञान कथाएं सहायक हो सकती हैं।

कार्यक्रम के दौरान शामिल प्रतिभागियों ने विज्ञान कथाओं के संबंध में अपनी जिज्ञासाओं और शंकाओं को विज्ञान कथाकारों के समक्ष रखा। उन्होंने इस दौरान रची गई अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। विषय विशेषज्ञों ने उन रचनाओं का आकलन करके उसमें से 6 श्रेष्ठ विज्ञान कथाओं का चयन किया। इन चुने गए रचनाकारों को डॉ. अपर्णा सिंह ने विज्ञान प्रसार द्वारा प्रकाशित पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप प्रदान कीं।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक एवं 'तस्लीम' के महामंत्री डॉ. जाकिर अली रजनीश ने कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी विज्ञान कथा की शुरुआत हुए 100 साल से अधिक हो गए हैं, लेकिन इसके बावजूद यह विधा अपनी पहचान के संकट से ग्रस्त है। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि विज्ञान कथाकार आत्मावलोकन करें और यह जानने का प्रयत्न करें कि आखिर वे कौन-से कारक हैं, जो इन स्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं।

पंजाब में पुस्तक प्रदर्शनी एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन

एन.बी.टी. की पुस्तकें लोकार्पित करते हुए, बाएं से–डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', प्रो. निरंजन तसनीम, मास्टर शांति स्वरूप, शिवेंद्र सिंह तथा हरीश मुदगिल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 31 दिसंबर 2011 से 12 जनवरी 2012 के दौरान पंजाब में पुस्तक परिक्रमा का आयोजन किया गया। इस पुस्तक परिक्रमा के दौरान नेशनल बुक ट्रस्ट की लगभग पौने पांच लाख रु. की पुस्तकों की बिक्री हुई।

1 जनवरी 2012 को भाई कन्हैया जी वेलफेयर सोसायटी, पखोवाल और पंजाबी साहित्य सभा पखोवाल के सहयोग से पखोवाल में पुस्तक प्रदर्शनी और साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस साहित्यिक कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित पंजाबी लेखक प्रो. निरंजन तसनीम ने की। मंच पर भाई कन्हैया जी वेलफेयर सोसायटी पखोवाल के प्रधान मास्टर शांति स्वरूप, मास्टर करनैल सिंह, यादगार पब्लिक लाइब्रेरी के संचालक श्री हरीश मुदगिल और ट्रस्ट की ओर से डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' उपस्थित थे। मंच संचालन श्री शविंद्र सिंह ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में ट्रस्ट की ओर से पंजाबी में प्रकाशित 3 पुस्तकें लोकार्पित की गईं। पुस्तकें थीं : *अमृता प्रीतम दीयां चौणवीयां कहानियां* : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' (संपादक); *भगत सिंह दे सियासी दस्तावेज* : प्रो. चमन लाल (संपादक), डॉ. जसविंद्र कौर (अनुवादिका); और *जहाज दी कहानी* : विमल कुमार श्रीवास्तव (लेखक), डॉ. कुलदीप सिंह धीर (अनुवादक)। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने ट्रस्ट की गतिविधियों और लोकार्पित की गई पुस्तकों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

श्री हरीश मुदगिल और मास्टर शांति स्वरूप ने भाई कन्हैया जी वेलफेयर सोसायटी, पखोवाल की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रो. निरंजन तसनीम ने ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित पुस्तकों की प्रशंसा की और कहा कि ट्रस्ट की ओर से पंजाब में पुस्तक की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विशेष यत्न किए जा रहे हैं। प्रो. तसनीम ने कहा कि पुस्तकों में हमें विशाल जीवन के रंग मिलते हैं और पुस्तक के जरिए हम दुनिया से जुड़ सकते हैं। इस अवसर पर भगवान ढिल्लों का काव्य संग्रह 'कलिंगा', तेजिंदर सिंह बाज का काव्य संग्रह 'गुआचिया मनुख', सोमपाल हीरा का नाटक 'कथा रुखां ते कुखां दी' और बलदेव सिंह ढिल्लों की निबंधों की पुस्तक 'कसवटी' भी लोकार्पित की गई। इसके बाद कवि दरबार का आयोजन किया गया जिसमें निम्न कवियों ने भाग लिया : प्रिंसिपल हरिकृष्ण नायर, सोमपाल हीरा, भगवान ढिल्लों, तेजिंदर सिंह बाज, रामप्रसाद, गुरमीत लक्की, दर्शन सिंह सुधार, बलबीर बल्ली और प्रदीप सिंह। लुधियाना जिले के इस छोटे-से गांव में पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान लगभग डेढ़ लाख रु. की पुस्तकों की बिक्री हुई।

पुस्तक प्रदर्शनियों के आयोजन का विवरण इस प्रकार है : शहीद करतार सिंह सराभा नगर और लुधियाना सराभा नगर (2 जनवरी), गोविंद नेशनल कॉलेज, नारंगवाल, जिला लुधियाना और दृष्टि डॉ. आर.सी. जेन इनोवेटिव पब्लिक स्कूल, नारंगवाल, जिला लुधियाना (3 जनवरी), सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल डेल्लों, जिला लुधियाना (4 जनवरी), गुरु हरि गोविंद खालसा कॉलेज, गुरुसर सुधार, जिला लुधियाना (5 जनवरी), जालंधर (6 जनवरी), नेशनल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल समराला (7 जनवरी)। इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से पंजाबी में बच्चों की दो पुस्तकें पंजाबी के प्रसिद्ध कहानीकार और पंजाबी साहित्य अकादमी लुधियाना के सीनियर वाइस प्रेजीडेंट श्री सुखजीत और मंचासीन वक्ताओं की ओर से लोकार्पित की गई। पुस्तकें थीं : दिविक रमेश की संपादित पुस्तक *जादू दी बंसरी अत्ते कोरियाई कहानियां* और बलदेव सिंह 'बद्दन' की पुस्तक *निओल भी राजा*। 7 जनवरी 2012 को सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल (छात्र) समराला में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 8-9 जनवरी 2012 को लुधियाना और 10,11,12 जनवरी 2012 को पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

स्टॉल पर पुस्तक प्रेमियों की भीड़

साहित्यकार द्रोणवीर कोहली नहीं रहे

प्रख्यात उपन्यासकार, कहानीकार, बाल साहित्य के लेखक तथा *आजकल* एवं *बालभारती* पत्रिकाओं के संपादक श्री द्रोणवीर कोहली का 24 जनवरी, 2012 को गुड़गांव, हरियाणा स्थित अपने आवास पर निधन हो गया।

वह आईआईएस अधिकारी भी थे। वे ऑल इंडिया रेडियो, नई दिल्ली में हिंदी समाचार एकांश के प्रमुख रहे थे तथा कुछ समय के लिए *सैनिक समाचार* के संपादक भी रहे थे। श्री कोहली समकालीन हिंदी साहित्यकारों में एक प्रतिष्ठित नाम और सशक्त हस्ताक्षर थे। उन्होंने प्रभूत मात्रा में बाल साहित्य भी लिखा तथा संपादक के क्षेत्र में भी उनकी दमदार उपस्थिति रही। उनके उपन्यासों–*टप्पर गाड़ी* तथा *हाइड पार्क*–की हिंदी साहित्यिक लेखन में बड़ी प्रतिष्ठा है।

श्री द्रोणवीर कोहली नेशनल बुक ट्रस्ट से भी जुड़े थे। ट्रस्ट द्वारा उनकी दो पुस्तकें प्रकाशित की गई थीं। ये पुस्तकें हैं– *डाक बाबू का पार्सल* (नेहरू बाल पुस्तकालय पुस्तकमाला) तथा *पिंजरा* (नवसाक्षर साहित्यमाला)।

सिनेमा आधारित कैलेंडर का लोकार्पण

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा वर्ष 2012 के कैलेंडर का लोकार्पण कार्यक्रम 6 जनवरी, 2012 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। कैलेंडर का लोकार्पण प्रख्यात अभिनेता श्री फारूख शेख द्वारा किया गया। यह कैलेंडर साहित्य और सिनेमा पर आधारित है।

अपने संबोधन में श्री शेख ने कहा कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है। वह जीवन का हिस्सा है और दर्शकों को चाहिए कि वह खराब फिल्मों को नकार दें, क्योंकि वे उसके लिए पैसा और समय देते हैं। इस असवर पर अपने वक्तव्य में ट्रस्ट के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने कहा कि 2013 में भारतीय सिनेमा का सौ वर्ष पूरा हो रहा है। इसी तथ्य के मद्देनजर 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का थीम भी भारतीय सिनेमा पर केंद्रित है तथा कैलेंडर में भी साहित्य और सिनेमा के रिश्ते को दर्शाते साहित्य आधारित फिल्मों के चित्र सम्मिलित किए गए हैं। विदित हो कि कैलेंडर में ऐसे फिल्मकारों को शामिल किया गया है, जिन्होंने न सिर्फ साहित्यिक कृतियों पर आधारित बेहतरीन फिल्में बनाईं, बल्कि भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय वाहवाही भी दिलवाई। कैलेंडर की परिकल्पना और रूपरेखा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा तैयार की गई। इसमें सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता और नेशनल फिल्म आर्काइव्स, पुणे का भी सहयोग मिला।

कैलेंडर लोकार्पण के अवसर पर डीडी न्यूज व टेलीविजन के महानिदेशक श्री एस.एम. खान तथा ट्रस्ट की संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) श्रीमती फरीदा एम नाईक ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बारीपदा पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा जिला प्रशासन, मयूरभंज तथा ओडिशा पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स एसोसिएशन के सहयोग से छौपड़िया, बारीपदा में 17 दिसंबर, 2011 को एक नौ दिवसीय पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। उद्घाटन करते हुए ओडिशा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. रामचंद्र बेहेरा ने कहा, "पुस्तकों में एक अनुपम आकर्षण होता है। ये न केवल एक व्यक्ति को बदल सकती हैं बल्कि समाज को भी बड़े पैमाने पर बदल सकती हैं।" बैठक की अध्यक्षता राज्य के बहुप्रतिष्ठित साहित्यिक संगठन, उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष, डॉ. रत्नाकर चैनी ने की। मुख्य वक्ता के रूप में श्रोताओं को संबोधित करते हुए श्री अध्यापक बिश्वरंजन ने कहा, "पुस्तकें मानवता की सबसे बड़ी मित्र हैं।" सभी वक्ताओं ने मयूरभंज जैसे सुदूर और जनजातीय क्षेत्र में एन.बी.टी द्वारा पुस्तक मेला लगाए जाने की एक स्वर में प्रशंसा की। मूल ओड़िया पुस्तक *ओड़िया हास्यगल्प* के संकलनकर्ता डॉ. बिजयानंद सिंह भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया। *कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियां* शीर्षक पुस्तक के ओड़िया अनुवाद का भी इस अवसर पर लोकार्पण किया गया।

पुस्तक मेले के दौरान अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। 19 दिसंबर को लोकार्पित पुस्तकों पर एक चर्चा-विमर्श का आयोजन किया गया, जिसमें प्रो. बिजय कुमार सत्पथी, प्रो. मनोरंजन प्रधान, डॉ. दुर्गा प्रसन्न पंडा तथा डॉ. कविता बारिक ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैष्णव चरण सामल ने की।

22 दिसंबर की शाम 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रख्यात ओड़िया कवि प्रो. सुरिंदर बारिक ने 'मेरा जीवन, मेरी कविता' विषय पर अपने संबोधन किए, जिसके बाद श्रोताओं के साथ एक खुला संवाद भी हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बिजय कुमार बारिक ने की।

23 दिसंबर को 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर' के ओड़िया अनुवाद का लोकार्पण किया गया तथा लोकार्पित पुस्तक पर चर्चा-विमर्श किया गया, जिसमें डॉ. ब्रजमोहन मिश्र, डॉ. बलराम मिश्र, प्रो. श्याम सुंदर आचार्य तथा डॉ. अरबिंदो गिरि ने भाग लिया। प्रख्यात ओड़िया कवि तथा अनुवादक श्री ब्रजनाथ रथ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

'पूज्य पूजा', 'मयूरभंज साहित्य परिषद' आदि जैसी क्षेत्रीय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुस्तक लोकार्पण के अनेक कार्यक्रम तथा पठन आदत के प्रोन्नयन पर कई चर्चाओं का आयोजन पुस्तक मेला के विशिष्ट आकर्षण रहे। 25 दिसंबर को पुस्तक मेले के समापन समारोह में प्रख्यात नाटककार डॉ. प्रमोद त्रिपाठी तथा मयूरभंज के जिला जनसंपर्क अधिकारी श्री रवींद्र कुमार नायक ने वक्ता के रूप में श्रोताओं को संबोधित किया।

सेवानिवृत्ति

ट्रस्ट में पैकर के पद पर कार्यरत **श्री प्रकाश** ने ट्रस्ट के विभिन्न विभागों में 30 वर्षों तक कार्य करने के उपरांत 31 जनवरी, 2012 को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। सन् 1981 में वे ट्रस्ट में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में नियुक्त हुए तथा 1997 में प्रोन्नत होकर पैकर बने। अपने लंबे कार्यकाल में उन्होंने अध्यक्ष, निदेशक, संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) के कार्यालयों के साथ संपादकीय तथा डिस्पैच विभागों में अपनी सेवाएं दीं। ट्रस्ट के समस्त सहकर्मी उनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

ट्रस्ट के पूर्व निदेशक श्री कर्त्तार सिंह दुग्गल के निधन पर ट्रस्ट-परिसर में शोक सभा

पंजाबी और उर्दू के प्रख्यात साहित्यकार तथा पूर्व ट्रस्ट-निदेशक श्री कर्त्तार सिंह दुग्गल के निधन पर ट्रस्ट-परिसर में 30 जनवरी को एक शोक सभा का आयोजन किया गया। ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा ने श्री दुग्गल के निधन को 'बड़ी क्षति' बताया। उन्होंने ट्रस्ट-परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने शोक-उद्‌गार में श्री दुग्गल को 'एन.बी.टी. का शिल्पी' कहा। उन्होंने कहा कि श्री दुग्गल ने ही 1972 में पहले विश्व पुस्तक मेले की नींव रखी। इससे पूर्व, ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बलदेव सिंह बद्दन ने अपने संबोधन में पूर्व निदेशक का जीवन वृत्तांत सुनाया। उन्होंने श्री दुग्गल के पंजाबी एवं उर्दू साहित्य में अतुलनीय योगदान की विशेष रूप से चर्चा की। उपस्थित शोकाकुल ट्रस्टकर्मियों ने श्री दुग्गल के निधन पर दो मिनट का मौन रखा।

विदित हो कि श्री कर्त्तार सिंह दुग्गल का 26 जनवरी, 2012 को 94 साल की आयु में दिल्ली में निधन हो गया था। वे सन् 1966 से 1973 तक ट्रस्ट के निदेशक रहे थे।

श्री दुग्गल का जन्म 1 मार्च, 1917 को धमिआल, रावलपिंडी, पाकिस्तान में हुआ था। पिता श्री जीवन सिंह दुग्गल एवं माता श्रीमती सतवंत कौर के योग्य संतान के रूप में श्री दुग्गल ने सरकारी सेवा में विभिन्न पदों पर रहते हुए पंजाबी, अंग्रेजी एवं उर्दू साहित्य की अपूर्व सेवा की। स्वतंत्रता से पूर्व, सन् 1942 में ही वे आकाशवाणी की सेवा में आए तथा 1966 में विभिन्न पदों पर रहते हुए अंततः स्टेशन डायरेक्टर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। फिर, सन् 1966 से 1973 तक वे नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के निदेशक रहे। निदेशक पद पर रहते हुए उन्होंने ट्रस्ट में कई अभिनव कार्य किए जिनमें विश्व पुस्तक मेला की शुरुआत (1972 में) महत्वपूर्ण पहल के रूप में थी। आज हम 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की शुरुआत के द्वार पर खड़े हैं (25 फरवरी से यह मेला शुरू होने जा रहा है)। श्री दुग्गल 1973 से 1976 तक सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सलाहकार रहे। उसके बाद से वे स्वतंत्र लेखन करते रहे।

श्री कर्त्तार सिंह दुग्गल बहुभाषाविद् थे। पंजाबी एवं उर्दू के अलावा वे हिंदी एवं अंग्रेजी के भी ज्ञाता थे। उन्होंने अंग्रेजी विषय से स्नातकोत्तर किया था। उनका रचना-संसार बेहद विस्तृत है और उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता एवं आलोचना आदि विधाओं में 60 से अधिक कृतियों का प्रणयन किया। 26 कहानी संग्रह, 15 उपन्यास, 14 नाटक संग्रह, छह आलोचना पुस्तक एवं चार काव्य संग्रहों के साथ पंजाबी एवं उर्दू साहित्य में श्री दुग्गल एक अप्रतिम शख्सियत के रूप में उपस्थित रहे। उनकी बहुत-सी कृतियों के भारत की विभिन्न भाषाओं समेत विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हुए। सिक्ख धर्म और इतिहास पर लिखी उनकी अंग्रेजी पुस्तकों को पाठकों ने बहुत पसंद किया। श्री दुग्गल द्वारा किया गया गुरु ग्रंथ साहब का अंग्रेजी काव्य अनुवाद का कार्य कालजयी महत्व का है। श्री दुग्गल के रचना-संसार की शुरुआत मुख्य रूप से 1941 से मानी जा सकती है जब एक ही वर्ष में (1941 में) उनकी तीन विधाओं में तीन पुस्तकें एक साथ प्रकाशित हुईं। सवेर सार (कहानी संग्रह), एक सिफर सिफर (नाटक संग्रह) तथा कंडे-कंडे (काव्य संग्रह) के साथ शुरू हुई उनकी सृजनात्मक यात्रा ने पंजाबी-उर्दू साहित्य का घट भर दिया। उनकी रचनाएं विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी शामिल की गईं।

ट्रस्ट से श्री दुग्गल की पांच महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हैं। ये हैं : *हाल मुरीदों का* (उपन्यास), *धर्मनिरपेक्ष धर्म* (सिक्ख फिलॉसॉफी), *ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर* (जीवनचरित), *किस पहि खोलऊं गठरी* (आत्मकथा) तथा *क्यों छुटहि बिन प्यार* (काव्य संग्रह)।

शोकोद्‌गार व्यक्त करते हुए प्रो. विपिन चंद्रा; साथ में श्री एम.ए. सिकंदर तथा श्री बलदेव सिंह बद्दन

श्री दुग्गल के साहित्य के क्षेत्र में महती अवदान को सम्मान देने के लिए भारत सरकार ने 1988 में उन्हें महत्वपूर्ण नागरिक सम्मान 'पद्‌मभूषण' से नवाजा। उन्हें साहित्य अकादेमी का पुरस्कार भी मिला (1965) तथा बाद में अकादेमी ने उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान कर उनके साहित्यिक अवदान को मान दिया (2007)। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार भी मिला था (1981)। इसके अलावा पंजाब तथा दिल्ली सरकार ने उन्हें अलग-अलग समयों में शिरोमणि साहित्यकार सम्मान से नवाजा (क्रमशः 1962 एवं 1976)। उन्हें गालिब सम्मान भी प्रदान किया गया था। पंजाबी साहित्य सभा, नई दिल्ली के वह पिछले तीन दशक से लगातार अध्यक्ष थे। वे 2002 से 2005 तक पंजाब कला परिषद के अध्यक्ष भी रहे। 1997 में वे राज्यसभा के लिए मनोनीत किए गए थे।

पूर्व ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. सुकुमार अझिकोड नहीं रहे

प्रख्यात विद्वान और गांधीवादी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के पूर्व अध्यक्ष प्रो. सुकुमार अझिकोड का 24 जनवरी को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे विगत साल भर से कैंसर से पीड़ित थे। 25 जनवरी को ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने प्रो. सुकुमार अझिकोड के निधन की सूचना ट्रस्टकर्मियों को दी तथा उनकी याद में दो मिनट का मौन रखा गया।

विदित हो कि प्रो. अझिकोड 8 दिसंबर, 1993 से 28 अक्तूबर, 1996 तक ट्रस्ट के अध्यक्ष रहे थे। ट्रस्ट में अध्यक्ष पद संभालने से पूर्व वे कालीकट विश्वविद्यालय में प्रो वीसी थे। वे मलयालम भाषा के प्रोफेसर रहे थे।

केरल के कन्नूर से संबंध रखने वाले प्रो. अझिकोड एक प्रकांड बुद्धिजीवी, लेखक, मानवतावादी, सांस्कृतिक पुरोधा, समर्पित धर्मनिरपेक्षतावादी, मानवाधिकारवादी एवं सामाजिक मूल्यों के प्रहरी थे। उन्होंने अपने विचारों को 35 से अधिक जिल्दों में समेटा। उन्होंने हजारों आलेख लिखे तथा असंख्य व्याख्यान दिए। उनकी सृजन-यात्रा में भारतीय दर्शन, वेद और उपनिषदों से लेकर शुद्ध साहित्यिक आलोचना तक सम्मिलित हैं। प्रो. अझिकोड की सबसे महत्वपूर्ण कृति 'तत्वमसि' (1984) को साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था। इसके अलावा, प्रतिष्ठित व्यालर सम्मान समेत इस कृति को आधा दर्जन से अधिक सम्मान प्राप्त हुए थे।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/02/2012

ट्रस्ट-परिसर में झंडोत्तोलन

गणतंत्र दिवस झंडोत्तोलन समारोह नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया मुख्यालय परिसर, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। इस अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने सभी ट्रस्टकर्मियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई दी।

चिट्ठीघर

प्रकाशन समाचार, पुस्तक मेलों और पुस्तक प्रदर्शनियों के समाचारों से युक्त इस पत्र में पुस्तक लोकार्पण आदि अवसरों पर विशिष्ट व्यक्तियों के व्याख्यानों में कही गई उच्च कोटि की साहित्यिक टिप्पणियों तथा विचारों से भी अवगत होने का अवसर मिलता है। अपने प्रकार के विशिष्ट प्रकाशन का स्वागत करते हुए आभार।

सूर्य प्रकाश शुक्ल, कानपुर, उ.प्र.

पूर्व की भांति पत्र के माध्यम से नेशनल बुक ट्रस्ट की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी मिली। ट्रस्ट का प्रकाशन के क्षेत्र में योगदान श्लाघनीय है।

प्रकाश सूना, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

दिसंबर अंक। राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में लगने वाली पुस्तक प्रदर्शनियों एवं मेलों की जानकारी प्राप्त हुई। पंजाबी की बहुतेरी पुस्तकों के लोकार्पण-समाचारों से पंजाबी लेखन के प्रति लोगों के योगदान का पता चला। इंदिरा गोस्वामी को विनम्र श्रद्धांजलि।

गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

संवाद यथासमय प्राप्त हो रहा है, जिसके द्वारा नई-नई जानकारियां मिलती रहती हैं। विश्व पुस्तक मेला की जानकारी भी मिली।

कैलाश चंद्र भाटिया, अलीगढ़, उ.प्र.

पाठक मंच बुलेटिन
बच्चों की द्विभाषी पत्रिका
वार्षिक शुल्क : रु. 50.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070